B.A - 1

मनोविज्ञान एवं उसका लक्ष्य (Scope)

Scope of Psychology - Dr. B. Kr

Psychology दो शब्दों से बना है। psyche तथा Logos. psyche का अर्थ आत्मा तथा Logos का मतलब विज्ञान बताया गया। बाद में psyche का मतलब मन और Logos का अर्थ विज्ञान माना गया और कहा गया कि "मनोविज्ञान मन का विज्ञान है." लेकिन यह परिभाषा बहुत दिनों तक नहीं मान्य रहा क्योंकि आत्मा अथवा मन का ना तो निरीक्षण किया जा सकता ना ही इसका प्रयोगात्मक अध्ययन हो सकता है।

वुण्ट ने चेतन अनुभूति को मनोविज्ञान की विषय-वस्तु माना और अंतःनिरीक्षण को इसकी विधि माना। लेकिन यह परिभाषा भी सभी मनोवैज्ञानिकों को संतुष्ट नहीं कर सका क्योंकि चेतन अनुभूति को मनोविज्ञान का विषय वस्तु मान लेने पर इसका क्षेत्र सीमित हो जाता है। चेतन अनुभूति व्यक्तिगत होती है। इसका अनुभव सिर्फ प्रयोज्य कर सकता है प्रयोगकर्ता नहीं।

Ex- पड़ोसी के घर में चोरी हो जाने पर भी हम सुख की अनुभूति करें और दुखे जाने पर दुख प्रकट करें।

व्यवहारवादी ने व्यवहार को मनोविज्ञान का विषय-वस्तु माना और वाह्य निरीक्षण को इसकी विधि। व्यवहारवादी वाटसन ने कहा कि व्यवहार को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है - उत्तेजना तथा प्रतिक्रिया. उन्होंने कहा कि उत्तेजना के प्रति प्रतिक्रिया का अध्ययन कर हम किसी व्यवहार को परिभाषित कर सकते हैं।

लेकिन उपरोक्त परिभाषा पर यह दोष लगाया गया कि सदा सर्वदा एक अनुभूति की अभिव्यक्ति एक व्यवहार के रूप में नहीं होती है।

Ex - किसी व्यक्ति के आँख में आँसू देखकर नहीं कहा जा सकता है कि यह दुख की आँसू है या सुख की.

उपर्युक्त वर्णन के आलोक में कहा जा सकता है कि मानव व्यवहार की सही जानकारी न तो केवल अनुभूति के अध्ययन से संभव है और न केवल व्यवहार के अध्ययन से। मनोवैज्ञानिकों ने अनुभूति तथा तथा व्यवहार दोनों को मनोविज्ञान का विषय-वस्तु माना और कहा कि "मनोविज्ञान अनुभूति तथा व्यवहार का विज्ञान है।"

लैंड्समैन ने कहा है कि "मनोविज्ञान व्यवहार तथा अनुभूति का विज्ञान है" इसी तरह वोरिंग, लैंगफिल्ड तथा वेल्ड ने कहा कि "मनोविज्ञान मानव के व्यवहार का अध्ययन उसकी प्रतिक्रियाओं एवं चेतन अनुभूति दोनों रूपों में करता है।

Scope of Psychology

मनोविज्ञान का उपयोग भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में किया जाता है:-

(i) प्रयोगात्मक मनोविज्ञान :- मनोविज्ञान की इस शाखा में मानसिक प्रक्रियाओं के संबंध में अध्ययन किया जाता है। अध्ययन के आधार पर परिकल्पना की जाँच कर सिद्धांत बनाये जाते हैं। Ex- अभ्यास से अध्ययन की मात्रा में वृद्धि होती है।

(ii) शारीरिक मनोविज्ञान :- मनोविज्ञान की इस शाखा में स्नायुमंडल का अध्ययन किया जाता है। जब किसी उत्तेजना से हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ उत्तेजित होता है तो स्नायु-प्रवाह उत्पन्न होता है मस्तिष्क द्वारा गति क्रिया किया जाता है और हम कोई व्यवहार करपाते हैं।

~~जटिल~~ जटिल क्रिया का अध्ययन शारीरिक मनोविज्ञान के अंतर्गत किया जाता है।

(iii) असामान्य मनोविज्ञान - असामान्य व्यवहार ऐसे व्यवहार को कहते हैं जो सामाजिक नियमों, नैतिक नियमों तथा कानून के द्वारा स्थापित नियमों के अनुकूल नहीं होता है। असामान्य मनोविज्ञान द्वारा व्यवहार के पीछे छिपे कारण, लक्षण तथा उपचार का अध्ययन किया जाता है।

(iv) समाज मनोविज्ञान - समाज मनोविज्ञान में व्यक्ति के भिन्न-भिन्न रूपों का अध्ययन किया जाता है। एक ही व्यक्ति कहीं राजनैतिक मनुष्य कहीं कवि कहीं आर्थिक मनुष्य के रूप में रह सकता है। समाज मनोविज्ञान का संबंध सामाजिक संबंध से होता है। समाज मनोविज्ञान के अंतर्गत भीड़, भाषण, प्रचार, जनमत आदि का अध्ययन किया जाता है।

(v) शिक्षा - मनोविज्ञान - मनोविज्ञान के इस शाखा में शिक्षा को उत्कर्ष पर पहुँचाने के लिए अध्ययन किया जाता है। इसमें खुद मनोविज्ञान के सिद्धांतों तथा नियमों का उपयोग किया जाता है।

(vi) औद्योगिक मनोविज्ञान - औद्योगिक मनोविज्ञान इस बात पर ध्यान देता है कि किस तरह मनोविज्ञान के सिद्धांतों और नियम का उपयोग कर कम से कम खर्च कर अधिक से अधिक उत्पादन हो सके। इस शाखा में कार्य दशाएँ, मनोबल, थकान आदि का अध्ययन किया जाता है।

(vii) पशु - मनोविज्ञान - पशु के ऊपर प्रयोगात्मक प्रयोग कर मनुष्य के स्वभाव को समझा जा सकता है। इसी कारण पशु - मनोविज्ञान को तुलनात्मक मनोविज्ञान कहा जाता है।

(viii) बाल मनोविज्ञान - इस शाखा के अंतर्गत किसी बालक के ऊपर वंश परंपरा का क्या असर है, का अध्ययन किया जाता है।